प्रार्थना से ज़्यादा महत्व ईश्वर के होने का

आघातजनक, फिर भी सत्य हकीकत यही है कि प्रार्थना को ज़्यादा महत्व दिया गया है। जो कि कई जगह प्रार्थना एक शिष्टाचार मात्र बनकर रह गई है। कहां फिर प्रार्थना रोज़िंदी क्रिया या रीति रिवाज़ की प्रवृत्ति बनकर रह गई है, और हाँ, फिर प्रार्थना ईश्वर प्रत्येक की मांग से आजीवन स्वरूप धारण कर रह गई है। प्रार्थना की प्रभावकता स्वयं सिद्ध है, लेकिन उस प्रभावकता साधने की प्रक्रिया घोर अपेक्षा बन गई है।

- ब्र. कु. गंगाधर

व्यक्ति को परिणाम ज़्यादा पसंद हैं, प्रक्रिया नहीं। हिमालय के सर्वोच्च उच्च शिखर एवरेस्ट विजय की बात सब करते हैं, लेकिन उस विजय प्राप्त करने के लिए किया गया पुरुषार्थ, उस विजय प्राप्ति के लिए किया गया श्रम, इसपर शायद ही कोई विचार करते हैं। हकीकत में परिणाम से ज़्यादा प्रक्रिया का महत्व है। जब हम कोई सुंदर कवि-कृति पढ़ते हैं तो परिणाम हम पाते हैं, लेकिन उसका सच्चा आनंद तो तब आता है, जब हम जानते हैं कि कैसी प्रक्रिया में से रचयिता कवि गुज़रा होगा और परिणाम स्वरूप ऐसी सुंदर काव्य रचना का सृजन हुआ!

लोग महात्मा गांधी की सिद्धि की बाते करते हैं, लेकिन उस सिद्धि के लिए उनके द्वारा किये गये प्रयत्न भूल जाते हैं। गांधी जी की अहिंसा की बात हम ज़ोर-शोर से करते हैं, परंतु क्या उस अहिंसा की सिद्धि के लिए गांधी जी द्वारा दिये हुए गुणों की तालीम का विचार करते हैं कोई? जब यह तालीम हो, तब ही अहिंसा का मार्ग सफल होता है। अहिंसा के लिए उच्च कोटि की त्याग वृत्ति, न्यायी वर्तन, आत्म सम्मान का भान, देह-पीड़ा सहन करने की शक्ति जैसे आंतरिक गुणों की आवश्यकता पर गांधीजी ने भार पूर्वक कहा था कि अहिंसा के मार्ग पर चलने पर ज़मीन रहे न रहे, धन छोड़ना पड़े, शरीर का भी त्याग करना पड़े, तो भी अहिंसा का उपासक उनकी परवाह ना करे, ऐसा उन्होंने कहा था। उन्होंने कहा था कि अभय हुए बिना पूर्ण अहिंसा का पालन संभव ही नहीं। अहिंसा की तालीम के लिए मरने की ताकत होनी चाहिए।अब विचार करें कि यदि व्यक्ति ने ऐसे गुणों की तालीम नहीं ली हो और ऐसे गुणों को नज़रअंदाज़ कर दिया हो, और फिर वह मात्र अहिंसा की भावना को रटता रहे तो सफल कैसे होगा?

ऐसे ही ईश्वर के आशीर्वाद के लिए गुणों की तालीम की ज़रूरत पड़ती है। ऐसी तालीम के लिए सबसे अधिक निर्णायक बात है व्यक्ति का ईश्वर के सम्मुख रहकर जीवन जीने का दृढ़ संकल्प, अर्थात् कि व्यक्ति की दृष्टि कोई सांसारिक सिद्धि प्राप्त करने की ओर न हो, अपितु ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए ही हो। सदा ईश्वर को सम्मुख रखने का अर्थ यही होता कि कोई भी कार्य करते वक्त ये विचार मन में रहे कि हमारे इस कर्म से ईश्वर प्रसन्न होगा या नाराज़? उनके जीवन के व्यवहार का माप-तोल का कांटा यही होगा कि जिससे ईश्वर खुश रहे ऐसा ही करना है, वो नाराज़ हो, ऐसा कभी नहीं करना।

वह दो रीति से ईश्वर के सम्मुख होगा। एक तो वह स्वयं प्रत्येक कार्य में ईश्वर को हाज़िर-नाज़िर रखेगा और दूसरा निरंतर वह ईश्वर के गुणों का चिंतन कर उन गुणों की प्राप्ति के लिए प्रयास करेगा। ऐसे गुण उसके व्यक्तित्व में शामिल हो जाएं, उसके जीवन में ये गुण खिले फूलों की तरह रहें - उसके लिए समान बन जिएगा। जीवन व्यवहार में उचित रहते हुए, प्रलोभन और आकर्षण के बीच में रहकर, वो उन दिव्य गुणों को हृदय में समाने और फिर उन गुणों को व्यवहार में प्रकट करने का प्रयास करेगा।

इसलिए जीवन में जो कुछ भी शुभ कार्य होता है उसमें 'मैं निमित्त हूँ, कार्य कराने वाला तो ईश्वर है' ऐसा मानने वालों को जीवन में सफलता ना ही उसे अहंकारी बनाती है और ना ही असफलता उनको घोर निराशा में डुबा नहीं सकती। व्यक्ति ईश्वर को प्रसन्न करने का प्रयत्न करेगा, तब ही अपने आप वो दूसरों के मदद रूप होने का पुरुषार्थ करेगा। - शेष पेज 8 पर

भगवान जैसा प्यारा और मीठा इस दुनिया में कोई नहीं

ओम् शान्ति का अर्थ बाबा ने प्रैक्टिकल बताया है। याद रहे मैं कौन हूँ? मेरा कौन है? बाबा ने कर्मो की गुह्य गति ऐसी समझाई है, साथ-साथ अच्छे कर्म करते हुए सर्वगुण सम्पन्न बनने का जो भाग्य मिला है, किसी का अवगुण दिखाई न पड़े तब सर्वगुण सम्पन्न बनेंगे। सर्व के गुण हमको सम्पन्न बनने में बहुत मदद करते हैं।

हम सब एक के हैं, एक हैं। अच्छा लगता हैं ना। बाबा देख रहा है कि बच्चों को जो मैंने सिखाया है, समझाया है उससे यह जीवन यात्रा बड़ी अच्छी सफल हो रही है। ऐसी यात्रा भक्तिमार्ग में नहीं है।

हमारे लिये कलियुग चला गया, सतयुग आने वाला है, यह हमको पता है। बाबा के बच्चे हैं ना, कहता है मैं सतयुग में नहीं आता हूँ, तो कहाँ जाता है? कहाँ रहता है? हमको भी यह रीस होती है कि मैं भी परमधाम में बाबा के साथ रहूँ। आपको इच्छा है जहाँ बाबा रहता है वहाँ रहने की? इस समय बाबा सूक्ष्मवतन में है ना, वहाँ से कैसे हमको देख रहा है? संगमयुग पर बाबा मैं तुम्हें देखता रहूँ... बाबा भी कहते हाँ बच्चे, मैं भी तुम्हें देखता रहूँ... जितना बाबा हमें देखता है उतना हम भी देखते हैं तो पूजनीय बन जाते हैं। अभी हम अपनी पूजा नहीं करायेंगे, पर पूजनीय बनना है। वन्डरफुल बाबा है, जैसे शिव भगवान ने ब्रह्मा द्वारा यज्ञ रचा। इतना अच्छा यज्ञ रचा है, जहाँ भोजन भी यज्ञ का इतना अच्छा और बाबा जो सुना रहा है वह भी बड़ा अच्छा है। हर मुरली पढ़ते सुनते सुनाते बाबा, मुरली, मधुबन, सखी रे मैंने पायो तीन रतन। इसी से सारे विश्व की सेवा हो गई। मुरली में खुदाई जादू है। तो मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा, शुक्रिया बाबा जो हम यहाँ नुमाशाम के समय इकट्ठे होके याद में बैठते हैं, फिर दिल की जो सच्ची बात है वो आपस में शेयर करते हैं। यह सारी दुनिया को पता चल गया है कि ब्रह्माकुमारियाँ क्या हैं और क्या कर रही हैं? यह सारा विश्व जानता है।

संसार में सन्देश देना कोई बड़ी बात नहीं है, पर हमारा चेहरा बतावे यह कौन हैं? दुनिया में जब कोई भी सुनते हैं, अनुभव करते हैं तो भूलते नहीं हैं। बाबा कहते हैं भूल मत जाना, क्या याद करना है? एक बाबा दूसरा न कोई, तो अभी आप भी सब ऐसे कहते हो ना, कोई है क्या, किसी का मित्र-सम्बन्धी? सभी हमारे मित्र हैं परन्तु बाबा जैसा मीठा, बाबा जैसा प्यारा कोई नहीं है। हमको भी ऐसा लायक बना रहा है जो चले वतन की ओर, खींच रहा है कोई डालके हमको प्रेम की डोर। इतना हम भाग्यवान तो क्या पदमापदम भाग्य है जो एकदम नज़र से निहाल स्वामी कींदा सतगुरू। यह सतगुरू बहुत अच्छा है। मैं पदमापदम भाग्यशाली अपने को समझती हूँ जो आदि रत्न बाबा ने सतयुग के आदि का भी अभी अनुभव कराया है। सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य होगा। हम भी उस राज्य में आयेंगे, साथ में राज्य करेंगे।

साकार बाबा ने मुझे एक बारी कहा था कि तुम राजाओं की सेवा करो तो ड्रामा अनुसार कोई न कोई प्लान बनाके राजाओं की सेवा करने के लिए जाके समझाती थी, कि अभी यह जो राजाई तुमको मिली है कुछ अच्छा दान पुण्य किया है तो राजाई मिली है। यह राजाई कभी भी कोई छीन सकता है लेकिन हमारी राजाई तो अविनाशी रहेगी, कोई छीन नहीं सकता। यह नशा और निश्चय हो तो मज़ा है, इस मज़े में फायदा ही फायदा है, क्योंकि यह कितनी खुशी की बात है। इसलिए मैं कहती हूँ मेरे से खुश-खैराफत पूछो नहीं, देखो। कितना सुख मिला है! न दु:ख देना, न दु:ख लेना। अगर मानो कोई मुझे दु:ख दे रहा है, वो याद करूंगी जैसेकि फलाने ने फलाने टाइम मुझे दु:ख दिया था या अभी भी कोई दे रहा है। तो उसे याद करके दु:खी हो जाऊंगी। लेकिन बाबा ने हमारे तो दु:ख का नाम निशान ही गुम कर दिया है। न दु:ख देना, न दु:ख लेना इसके बदले दुआयें देना, दुआयें लेना। कोई कोई हमारे पास आते हैं दुआ दो, आशीर्वाद दो, मैं कहती हूँ आशीर्वाद मांगने से नहीं मिलती है। आप सच्च ाई क्या है उसकी गहराई में जाओ और देही-अभिमानी स्थिति यानी सोल-कॉन्शियस रहो तो इससे बहुत कमाई होती है। इस कमाई की सम्भाल के लिये कोई कबाट आदि में रखने की जरुरत नहीं है।

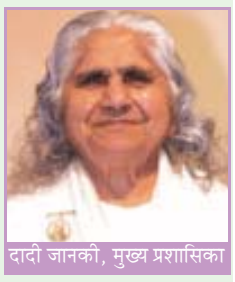

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

प्रवृत्ति में रहते ब्रह्मा बाप समान बेफिक्र बादशाह बनो

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

आजकल के ज़माने में प्रवृत्ति में एक फिक्र जाता है तो दस आते हैं, लेकिन वह हमारे लिए नहीं हैं, क्योंकि हमारे पास आया, हमने बाबा को दे दिया बस। हम बेफिक्र बादशाह। दिल से दिया, दिल से बाबा को साथी बनाया तो कोई फिक्र नहीं। आप कहेंगे शिवबाबा तो है निराकार, हम तो साकार में हैं, लेकिन ब्रह्मा बाबा भी तो हमारे जैसा ही साकार था। अंतिम जन्म था, आयु भी वानप्रस्थ अवस्था की थी, सब अनुभव था, व्यापार का, प्रवृत्ति का, भक्ति का... सब अनुभव था। ब्रह्मा बनने के बाद भी कितनी आत्माओं के जीवन की ज़िम्मेवारी थी, फिर भी बेफिक्र रहे और यह नया क्रान्तिकारी काम था, उस समय दुनिया के आगे यह एक चैलेंज थी। पवित्रता की बात जो लोगों के लिए असंभव थी, कहते थे आग और कपूस साथ कैसे रह सकते हैं। साथ रहें और विकारों की आग न लगे, यह तो असंभव है। तो आप सोचो, बाबा के सामने कितने विघ्न आये होंगे। फिर भी बाबा बेफिकर बादशाह। ऐसे बाबा कहते बच्चे फॉलो करो। जब भी ऐसी कोई बात आती है, तो ब्रह्मा बाबा का सैम्पुल सामने देखो।

हमने बाबा को बचपन से देखा है, कभी भी बाबा के चेहरे पर फिक्र की लहर नहीं देखी। बाबा को दो शब्द बहुत पक्के थे - बच्चे, नथिंग न्यु। दूसरा - यही शब्द बाबा के मुख पर था - बच्ची, ज़िम्मेवारी शिवबाबा की है, हम तो निमित्त हैं। बाबा बैठा है। कुछ भी ऐसी बात हो जाये तो बाबा कहता बच्ची, इसमें भी अच्छाई भरी हुई है। मानो कुछ बुरा भी हो गया और हो रहा है, लेकिन फिर भी बाबा कहते थे जो हो रहा है वो अच्छा, और जो हो गया है वो बहुत अच्छा। यह बाबा का स्लोगन था। बाबा बुराई से भी अच्छाई निकाल, निगेटिव को भी पॉज़ीटिव नज़र से देखते थे। कोई निगेटिव बात हो गई या मन में आ गई, तो कहते यह तो बुरा हो गया, शिवबाबा तो भूल गया। उसी को ही सोचने में लग जाते हैं, लेकिन ऐसे बुराई में अच्छाई क्या लेनी है। क्यों हुआ यह बुरा, ज़रूर कोई हमारी ही कमज़ोरी का कारण होगा।

हमने गलती नहीं की दूसरे ने की, इसलिए इसमें हमारा तो कोई कसूर नहीं है, इसने ही किया... लेकिन बाबा कहता था अच्छा उसने कसूर किया आपने नहीं किया, इसलिए आप बहुत सच्चे और अच्छे हो, लेकिन उसने समझो क्रोध किया और उसके क्रोध को आपने फील किया, मेरे पास फीलिंग की बीमारी आई, तो वह बीमार हुआ क्रोध में और आप बीमार हुए फीलिंग में, तब तो मन चल रहा है। अंदर धारण हुआ, तभी तो आपके मन में क्यों, क्या, संकल्प चल रहे हैं। बाबा का स्लोगन क्या है - न दु:ख दो, न दु:ख लो।

देना तो नहीं है, लेकिन दूसरा कोई देता है तो लेना भी नहीं है, तब तो अच्छा-अच्छा हुआ। जो बुरा काम हुआ, उसको निगेटिव से पॉज़ीटिव में परिवर्तन कर उससे शिक्षा ले लो, तो आगे से मुझे क्या शिक्षा मिली, आगे से मुझे अपने में क्या करेक्शन करनी है? यह सोचो तो निगेटिव भी पॉज़ीटिव हो जायेगा। तो ऐसी बाबा की शिक्षा थी, ब्रह्मा बाबा की प्रैक्टिकल लाइफ थी। तो क्या ऐसा हम अपनी लाइफ में प्रैक्टिकली नहीं कर सकते हैं! बेफिक्र बादशाह हम नहीं बन सकते हैं?

एक निगेटिव और दूसरा व्यर्थ। छोटी सी बात को बड़ा करना, बड़ी बात को छोटी करना - यह हमारे हाथ में है। यह नेचर होती है। बड़ी बात को नथिंग न्यू समझो, मुझे भविष्य के लिए क्या करना है, वह सोचो और फुलस्टॉप लगाओ क्योंकि बीती को सोचने से फायदा कुछ नहीं। हो गया, उसको सोचने से फायदा क्या है? बदल जायेगा? नहीं, वह तो हो गया। जैसे कहते हैं कि तीर कमान से निकल गया, वह फिर वापस आयेगा क्या? नहीं, इसीलिए योगी जीवन है हमारी, योगी जीवन में बेफिक्र बादशाह हैं तो योग लगेगा। कोई फिक्र है यह क्यों हुआ, यह क्या हुआ... यह फिकर होगा तो फिर योगी जीवन नहीं होगी। दो घण्टे के योगी, चार घण्टे के योगी और बाकी भोगी हुए और क्या हुए? तो ऐसी हमारी निरंतर योगी जीवन हो।